साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

हिन्द की ख़ुशी

राकेश कुमार वर्मा

मैं अपने आगोश में,
हिन्द की ख़ुशी लाया हूँ,
दूर बैठा हूँ कही, मगर
ऐ-हिन्द! तेरे दर्द से गरमाया हूँ,

जोश भर दूँगा,
सोये जमीर में उनके,
ऐ हिन्द! आज मै,
विरोध से भर्राया हूँ १

बंदिश-ऐ- साहिल की, के
समुद्र बांध ले आँचल में,
मुद्दत-ऐ-बरखा, के
तस्व्वुर-ऐ-रौशनी हो, जेसे
बंजर भू-तल में,

कुछ इस तरहां,
बुलंद तू अपना,
मुकाम कर ले,
ऐ हिन्द के वासी,

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

तू हिन्द की खिदमत में,
अपना नाम कर ले.....२

कौंध भरने में लगा तू,
कहा इसे ले जायेगा,
सिकंदर-ऐ-मुकाम,
ही तो पीछे रह जायेगा,

देख फिर सूरत-ऐ-समां
बदल जाएगी,
समय रहते,
देश हित में कोई काम कर ले.....३

कही सींचकर बड़ा हुआ,
लहू तन का,
कही पसीने से तर है,
दिल-ऐ-मनका,

ऐसे भारत वर्ष की तू,
कहानी है,
उबलती-उफनती हुई,
जवानी है.....४

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

संभल जा, रुक जा
देख मेरे विश्वकर्मा
नहीं तो.....

तेरे आशुओ से पिघलती,
एक और कहानी होगी,
कभी लूटा है अंजानो ने,
अब तेरे अपने ही हाथो,
बेआबरू इस हिन्दकी जवानी होगी.....५

मैं अपने आगोश में,
हिन्द की ख़ुशी लाया हूँ,
दूर बैठा हूँ कही, मगर
ऐ-हिन्द! तेरे दर्द से गरमाया हूँ,

ये सोचता हूँ, के
जब तेरी मंजिले खाख होगी,
रुक जा ऐ भारत वासी,
नहीं तो,
मिटते हुए हिन्द की,
तेरे हाथो में राख होगी.....६

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

सभ्यता संस्कृति को तो तूने,
ठुकराया है,
अंधो की तरहा,
पाश्चात्य को अपनाया है,

फिर रोता है बैठ,
अपनी किस्मत पे,जब
अपनी औलाद ने ही तुझे,
नहीं अपनाया है.....७

मैं अपने आगोश में,
हिन्द की ख़ुशी लाया हूँ,
दूर बैठा हूँ कही, मगर
ऐ-हिन्द! तेरे दर्द से गरमाया हूँ,

दोहरे चरित्र में कही तू,
फसने चला है,
अपने ही बनाये हुए दलदल में,
धसने चला है,
पाग पहनी है देशहित की,
और देख,
अपने ही वतन को डसने चला है.....९

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

कर्मो की श्याही से,
नयी तस्वीर सजा,
ऐ हिन्द के वासी ,
जरा संभल भी जा,

टूटती देह है भारत की,
कहा तू खोया है,
देख नासूर ये पीड़ा का,
तूने खुद ही संजोया है,
हाथ है माटी तेरी किस्मत की,
वर्ना हिन्द तो बेजुबां,
आराम से अंत तक सोया है.....१०

मैं अपने आगोश में,
हिन्द की ख़ुशी लाया हूँ,
दूर बैठा हूँ कही, मगर
ऐ-हिन्द! तेरे दर्द से गरमाया हूँ,.....११

राकेश कुमार वर्मा (आवारा बंजारा)